20 DAYS of FOREVER

A story of right love at the wrong time

RUPENDRA SHUKLA

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Rupendra Shukla 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-263-1

Cover design: Shariq Ansari
Typesetting: Simran

First Edition: April 2026

CONTENTS

Chapter 1: The First Glance 1
Chapter 2: The Curiosity 5
Chapter 3: The Silent Beginning 9
Chapter 4: The Unspoken Connection 14
Chapter 5: The Turning Point 20
Chapter 6: The Return 26
Chapter 7: The Confession 33
Chapter 8: The Distance 39
Chapter 9: The Normal Days 46
Chapter 10: New Year, New Moments 51
Chapter 11: A Friendship That Never Ends 58
Chapter 12: The Message 64
Chapter 13: Eighteen Secret Days 70
Chapter 14: The Day Everything Fell Silent 76
Chapter 15: After the Silence 84

Chapter 1

THE FIRST GLANCE

उदयपुर की सुबह हमेशा की तरह शांत और सुनहरी थी। पहाड़ियों के पीछे से निकलती सूरज की हल्की किरणें धीरे-धीरे शहर को जगाने लगी थीं। सड़कों पर अभी भीड़ नहीं थी, हवा में ठंडक थी, और हर चीज़ जैसे अपनी जगह पर ठहरी हुई लग रही थी।

इसी शहर में एक लड़का रहता था — ऋषभ।

ऋषभ कोई साधारण लड़का नहीं था। वह कक्षा 8 का छात्र था, चन्द्रशेखर आज़ाद स्मारक इंटर कॉलेज में पढ़ता था। पढ़ाई में तेज, स्वभाव से खुशमिजाज और हर किसी की मदद करने वाला। स्कूल में अगर किसी को कोई समस्या होती, तो सबसे पहले जिस नाम का ख्याल आता, वह था — ऋषभ।

क्लास में उसकी एक अलग पहचान थी। हर साल रिजल्ट के दिन जब प्रिंसिपल स्टेज पर खड़े होकर टॉपर्स के नाम पढ़ते, तो लगभग तय होता था कि पहला नाम ऋषभ का ही होगा।

लेकिन पढ़ाई ही उसकी पूरी दुनिया नहीं थी। उसे क्रिकेट खेलना बेहद पसंद था। मैदान में जब वह बैट पकड़ता, तो उसके चेहरे की चमक अलग ही होती थी। गेंद हवा में उड़ती और उसके दोस्तों की आवाज़ गूंज उठती — "शॉट ऋषभ!"

इसके अलावा उसे कुकिंग का भी शौक था। खाली समय में वह कभी-कभी घर पर नई-नई चीज़ें बनाने की कोशिश करता और धीरे-धीरे यह उसका पसंदीदा शौक बन गया था।

ऋषभ के दोस्त भी उसे बहुत पसंद करते थे, क्योंकि वह हमेशा सबकी मदद करता था। उसकी जिंदगी सीधी, सरल और खुशियों से भरी हुई थी।

लेकिन जिंदगी हमेशा एक जैसी नहीं रहती।

साल 2020 में अचानक पूरी दुनिया बदल गई।

लॉकडाउन।

स्कूल बंद हो गए। मैदान सूने हो गए। बच्चों की हँसी की जगह घरों में सन्नाटा फैल गया। ऋषभ भी अब घर से ही पढ़ाई करने लगा। धीरे-धीरे दिन बीतते गए और समय बदलता गया।

जब हालात थोड़े बेहतर हुए, तो उसके परिवार ने एक बड़ा फैसला लिया। उन्होंने तय किया कि अब ऋषभ को शहर के एक बड़े इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला दिलाया जाए।

वह स्कूल था — उदयपुर कॉन्वेंट स्कूल।

शहर के सबसे अच्छे स्कूलों में से एक।

नई यूनिफॉर्म, नई किताबें, नया माहौल… और नए लोग।

पहले दिन जब ऋषभ स्कूल के बड़े गेट से अंदर गया, तो उसके मन में हल्की-सी घबराहट थी। सब कुछ उसके पुराने स्कूल से अलग था। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स, अंग्रेज़ी में बातें करते बच्चे, और हर तरफ एक नया माहौल।

वह धीरे-धीरे अपनी क्लास की तरफ बढ़ा और पीछे की एक सीट पर जाकर बैठ गया। उसका दिल थोड़ा तेज धड़क रहा था। सब कुछ नया था, और वह खुद को उस माहौल में ढालने की कोशिश कर रहा था।

कुछ ही देर बाद क्लास का दरवाज़ा खुला।

एक लड़की अंदर आई।

वह शांत थी, आत्मविश्वास से भरी हुई। उसके हाथ में किताबें थीं और चेहरे पर हल्की-सी गंभीरता। उसकी आँखों में एक अलग-सी गहराई थी, जैसे वह दुनिया को थोड़ा अलग नजरिए से देखती हो।

जैसे ही वह अपनी सीट पर बैठी, क्लास का माहौल थोड़ा बदल गया। पास बैठे एक लड़के ने धीरे से कहा —

“वो हमारी क्लास की टॉपर है।”

ऋषभ ने अनजाने में उसकी तरफ देखा।

बस एक पल के लिए।

लेकिन वह पल कुछ अलग था।

उसने जल्दी से नज़र हटा ली, जैसे वह खुद भी समझ नहीं पा रहा था कि उसने क्यों देखा। उसके दिल में एक हल्की-सी अजीब-सी भावना हुई, जिसे वह शब्दों में नहीं समझ पा रहा था।

उस दिन के बाद ऋषभ ने कई बार उसे नोटिस किया। कभी वह पढ़ते हुए दिखती, कभी टीचर के सवालों का जवाब देते हुए। हर बार वह उतनी ही शांत और आत्मविश्वास से भरी हुई लगती।

लेकिन ऋषभ ने कभी उससे बात नहीं की।

न कोई सवाल, न कोई परिचय।

बस कभी-कभी…

एक नज़र।

और शायद वही पहली नज़र एक नई कहानी की शुरुआत थी।

कभी-कभी जिंदगी की सबसे बड़ी कहानियाँ एक छोटी-सी नज़र से शुरू होती हैं।

ऋषभ को अभी तक यह नहीं पता था कि उस दिन क्लास में हुआ वह छोटा-सा पल उसकी जिंदगी की दिशा बदलने वाला है।

उस दिन सिर्फ एक नज़र मिली थी…

लेकिन वही नज़र बनने वाली थी —

20 दिनों की एक ऐसी कहानी की शुरुआत,

जो हमेशा के लिए याद रह जाएगी।

और यही था — THE FIRST GLANCE

Chapter 2

THE CURIOSITY

उदयपुर कॉन्वेंट स्कूल में ऋषभ का दूसरा हफ्ता शुरू हो चुका था।

अब तक वह नए माहौल के साथ थोड़ा-बहुत घुलने लगा था, लेकिन फिर भी उसे कभी-कभी लगता था कि वह इस दुनिया का हिस्सा नहीं है।

पुराने स्कूल में सब कुछ आसान था — दोस्त, टीचर्स, मैदान… सब कुछ अपना सा लगता था। लेकिन यहाँ सब कुछ अलग था। अंग्रेज़ी में बातचीत, अलग तरह की पढ़ाई और हर किसी में आगे निकलने की होड़।

ऋषभ शांत स्वभाव का था, लेकिन उसके अंदर एक अलग ही आत्मविश्वास था। वह जानता था कि मेहनत से वह किसी भी जगह अपनी पहचान बना सकता है।

और धीरे-धीरे वही होने लगा।

क्लास में जब भी टीचर कोई मुश्किल सवाल पूछते, तो कुछ ही सेकंड में ऋषभ का हाथ उठ जाता। पहले तो सबको हैरानी होती थी।

“ये नया लड़का इतना जल्दी जवाब कैसे दे देता है?” कई बच्चे आपस में यही बात करते थे।

लेकिन एक इंसान था जो चुपचाप यह सब देख रहा था।

वही लड़की।

वह हमेशा पहली बेंच पर बैठती थी, और हर सवाल का जवाब देने की आदत उसकी भी थी। अब पहली बार ऐसा हो रहा था कि कोई और भी उतनी ही तेजी से जवाब दे रहा था।

एक दिन मैथ्स की क्लास में टीचर ने एक कठिन सवाल पूछा। पूरी क्लास चुप हो गई।

कुछ सेकंड बाद दो हाथ एक साथ उठे।

पहला हाथ उस लड़की का था।

दूसरा हाथ ऋषभ का।

टीचर ने पहले लड़की को जवाब देने के लिए कहा। उसने आत्मविश्वास के साथ पूरा हल समझा दिया।

फिर टीचर ने ऋषभ की तरफ देखा।

"तुम बताओ, क्या यही तरीका है?"

ऋषभ खड़ा हुआ और उसने वही सवाल एक अलग तरीके से हल करके दिखाया। पूरी क्लास कुछ सेकंड के लिए शांत हो गई।

टीचर मुस्कुराए।

"Very good… दोनों तरीके सही हैं।"

उस दिन पहली बार उस लड़की ने ऋषभ की तरफ थोड़ा ध्यान से देखा।

और ऋषभ ने भी।

लेकिन फिर दोनों ने तुरंत अपनी नजरें किताबों में झुका लीं।

उस दिन के बाद ऋषभ के मन में एक अजीब-सी जिज्ञासा पैदा होने लगी।

वह अक्सर सोचता —

“ये लड़की है कौन?

इतनी शांत क्यों रहती है?

और हर बार इतना सही जवाब कैसे देती है?”

वह कभी-कभी क्लास में उसे पढ़ते हुए देखता। उसके चेहरे पर हमेशा एक हल्की-सी गंभीरता रहती थी, जैसे उसके मन में कोई अलग ही दुनिया चल रही हो।

ऋषभ कई बार सोचता कि उससे जाकर बात करे।

लेकिन हर बार वह रुक जाता।

शायद झिझक थी।

शायद नया माहौल।

या शायद कुछ और।

उसका दोस्त प्रफुल्ल एक दिन उसके पास बैठा था। उसने धीरे से कहा —

“तुम जानते हो वो कौन है?”

ऋषभ ने अनजान बनने की कोशिश की।

“कौन?”

प्रफुल्ल हल्का सा मुस्कुराया।

“अरे वही… जो पहली बेंच पर बैठती है। वो हमारी क्लास की टॉपर है। पिछले तीन साल से।”

ऋषभ ने बस हल्के से सिर हिला दिया। लेकिन उसके मन में अब और भी ज्यादा सवाल थे।

उस दिन जब स्कूल खत्म हुआ, तो ऋषभ सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था।

अचानक उसने देखा — वही लड़की सामने से आ रही थी।

दोनों कुछ सेकंड के लिए आमने-सामने आ गए।

लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा।

बस एक हल्की-सी नज़र।

और फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चल दिए।

शायद दोनों के मन में कुछ सवाल थे।

लेकिन अभी तक किसी के पास उनके जवाब नहीं थे।

कभी-कभी जिज्ञासा ही उन कहानियों की शुरुआत होती है, जिनका अंत कोई नहीं जानता।

ऋषभ के लिए वह लड़की अब सिर्फ एक क्लासमेट नहीं रह गई थी।

वह अब एक सवाल बन चुकी थी।

और ऋषभ को सवालों के जवाब ढूंढना बहुत पसंद था।

लेकिन उसे अभी तक यह नहीं पता था कि इस सवाल का जवाब ढूंढते-ढूंढते…

वह खुद एक नई कहानी का हिस्सा बनने वाला है।

And this was — The Curiosity.

Chapter 3

THE SILENT BEGINNING

उदयपुर कॉन्वेंट स्कूल में समय धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। अब ऋषभ को वहाँ आए कुछ महीने हो चुके थे। नया माहौल अब उतना अजनबी नहीं लगता था।

उसने कुछ अच्छे दोस्त भी बना लिए थे। उसके दोस्तों के छोटे से ग्रुप में प्रफुल्ल, राहुल, आदित्य, विवेक, करण और दो-तीन अन्य लड़के थे। कुल मिलाकर सात-आठ दोस्तों का एक छोटा-सा समूह बन गया था।

लंच ब्रेक में ये सब अक्सर साथ बैठते, मज़ाक करते, कभी पढ़ाई की बातें करते तो कभी क्रिकेट की।

दूसरी तरफ प्रतिमा का भी अपना एक छोटा सा ग्रुप था — चार लड़कियों का। वे भी अक्सर साथ ही रहती थीं।

धीरे-धीरे समय के साथ दोनों ग्रुप्स के बीच भी बातचीत होने लगी। कभी किसी प्रोजेक्ट के बहाने, कभी किसी असाइनमेंट के कारण। अब वे सब एक-दूसरे को पहचानने लगे थे।

लेकिन इन सबके बीच एक रिश्ता ऐसा था जो किसी को साफ-साफ दिखाई नहीं देता था।

वह रिश्ता था — ऋषभ और प्रतिमा के बीच की खामोशी।

दोनों अक्सर एक ही क्लास में होते, कभी एक ही ग्रुप में खड़े होते, कभी एक ही सवाल पर चर्चा सुनते...

लेकिन फिर भी दोनों के बीच शब्द बहुत कम होते।

बस कभी-कभी नज़रें मिलतीं।

और फिर तुरंत हट जातीं।

एक दिन प्रफुल्ल ने अचानक ऋषभ से पूछा —

"तुमने कभी प्रतिमा से ठीक से बात की है?"

ऋषभ थोड़ा चौंक गया।

"नहीं… क्यों?"

प्रफुल्ल हल्के से मुस्कुराया।

"कुछ नहीं… बस ऐसे ही पूछ रहा था।"

ऋषभ ने बात को वहीं खत्म कर दी।

लेकिन उसके मन में फिर वही सवाल उठने लगे।

इसी बीच एक और छोटी-सी घटना हुई, जिसने सब कुछ थोड़ा बदल दिया।

ऋषभ ने इंग्लिश की कोचिंग जॉइन करने का फैसला किया। वह जानता था कि अगर उसे इस नए स्कूल में और बेहतर करना है, तो इंग्लिश में और मजबूत होना पड़ेगा।

कोचिंग शहर की एक छोटी लेकिन अच्छी क्लास में होती थी। पहले दिन जब वह कोचिंग के कमरे में दाखिल हुआ, तो उसने चारों तरफ देखा। कुछ बच्चे पहले से बैठे हुए थे।

और फिर अचानक उसकी नज़र एक चेहरे पर जाकर रुक गई।

वह प्रतिमा थी।

वह वहाँ पहले से बैठी थी।

कुछ सेकंड के लिए ऋषभ ठहर सा गया। शायद उसे उम्मीद नहीं थी कि वह यहाँ भी मिलेगी।

प्रतिमा ने भी उसे देखा।

बस एक पल के लिए।

फिर दोनों ने बिना कुछ कहे अपनी-अपनी सीट पर बैठना ही ठीक समझा।

अब एक नया सिलसिला शुरू हुआ।

सुबह स्कूल में मिलना…

शाम को कोचिंग में फिर मिलना…

दोनों एक ही कमरे में बैठते, एक ही टीचर की बात सुनते, कभी-कभी एक ही नोट्स लिखते।

लेकिन फिर भी… बातें बहुत कम होतीं।

कभी-कभी जब टीचर कोई सवाल पूछते, तो दोनों लगभग एक साथ जवाब सोचते। कभी किसी शब्द का मतलब समझ में नहीं आता, तो दोनों किताब में ढूँढते।

लेकिन जो सबसे ज्यादा होता था, वह था — खामोशियों का आदान-प्रदान।

एक दिन कोचिंग खत्म होने के बाद हल्की बारिश शुरू हो गई। बच्चे जल्दी-जल्दी बाहर निकलने लगे।

ऋषभ दरवाजे के पास खड़ा होकर बारिश को देख रहा था। उसके पास छाता नहीं था।

तभी उसने देखा — प्रतिमा उसके पास आकर खड़ी हो गई। उसके हाथ में छाता था।

कुछ सेकंड तक दोनों चुप रहे।

फिर प्रतिमा ने हल्के से कहा —

"बारिश रुकने का इंतज़ार कर रहे हो?"

ऋषभ ने हल्के से सिर हिला दिया।

"हाँ…"

फिर दोनों फिर से चुप हो गए।

कुछ देर बाद बारिश थोड़ी हल्की हुई और बच्चे धीरे-धीरे निकलने लगे।

प्रतिमा भी आगे बढ़ी।

ऋषभ ने एक पल के लिए सोचा…

लेकिन फिर कुछ नहीं कहा।

दोनों एक ही रास्ते पर चल पड़े —

एक ही दिशा में…

लेकिन फिर भी चुप।

शायद दोनों के मन में कुछ चल रहा था।

शायद दोनों कुछ कहना चाहते थे।

लेकिन शब्द जैसे रास्ता नहीं ढूँढ पा रहे थे।

कुछ कहानियाँ शब्दों से नहीं, खामोशियों से लिखी जाती हैं।

ऋषभ को अब धीरे-धीरे एहसास होने लगा था कि प्रतिमा उसके लिए सिर्फ एक क्लासमेट नहीं रही।

और शायद…

प्रतिमा के मन में भी कुछ ऐसा ही चल रहा था।

लेकिन अभी यह कहानी सिर्फ शुरुआत थी।

एक खामोश शुरुआत।

Chapter 4

THE UNSPOKEN CONNECTION

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

दिन पहले जैसे ही थे — सुबह स्कूल, दोपहर दोस्तों के साथ हंसी-मज़ाक, और फिर घर लौटकर होमवर्क।

सब कुछ सामान्य था… लेकिन ऋषभ के लिए इन दिनों में कुछ अलग था।

अब उसके दिन का एक हिस्सा ऐसा हो गया था, जिसका उसे खुद भी इंतज़ार रहने लगा था — प्रतिमा का दिखना।

कभी क्लास में जब वह खिड़की के पास बैठती, तो ऋषभ अनजाने में उसकी तरफ देख लेता।

कभी लाइब्रेरी में वह किताब ढूंढती नजर आती, और ऋषभ को लगता जैसे पूरा माहौल शांत हो गया हो।

कभी स्कूल के गलियारे में चलते हुए अचानक आमना-सामना हो जाता, और दोनों बिना कुछ कहे आगे बढ़ जाते।

दोनों के बीच अब भी कोई खास बातचीत नहीं थी।

लेकिन खामोशी अब अजीब नहीं लगती थी।

उस खामोशी में एक अपनापन था… एक अनकहा रिश्ता था।

इन्हीं दिनों एक सुबह क्लास टीचर थोड़े अलग अंदाज़ में क्लास में आए।

उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी, जैसे वे कोई अच्छी खबर देने वाले हों।

उन्होंने क्लास में आते ही कहा —

“अगले महीने हमारे स्कूल का वार्षिक समारोह होने वाला है।”

इतना सुनते ही पूरी क्लास में उत्साह फैल गया।

कुछ बच्चे एक-दूसरे से बात करने लगे, कुछ खुश होकर मुस्कुराने लगे।

टीचर ने हाथ उठाकर सबको शांत किया और आगे बोले —

“इस बार हमारी क्लास भी एक ड्रामा प्रस्तुत करेगी।”

अब तो पूरी क्लास में हलचल मच गई।

टीचर ने थोड़ी देर रुककर कहा —

“और इस ड्रामा की तैयारी की जिम्मेदारी मैं चार बच्चों को देना चाहता हूँ।”

उन्होंने नाम पुकारे —

“ऋषभ… प्रतिमा… प्रफुल्ल… और अनाया।”

चारों के नाम सुनते ही क्लास में हल्की फुसफुसाहट शुरू हो गई।

अनाया ने प्रतिमा की तरफ देखा और मुस्कुरा दी।

प्रफुल्ल ने धीरे से ऋषभ को कुहनी मारी —

“लगता है अब काम शुरू।”

चारों को आगे बुलाया गया।

टीचर ने कहा —

“तुम चारों मिलकर ड्रामा की कहानी तैयार करोगे, स्क्रिप्ट लिखोगे, और रोल तय करोगे। बाकी बच्चे तुम्हारी टीम होंगे।”

चारों ने हल्का सा सिर हिलाया।

लंच ब्रेक में चारों पहली बार एक साथ बैठे।

शुरुआत में थोड़ी झिझक थी।

कुछ पल चुप्पी रही।

फिर प्रफुल्ल ने कहा —

“तो… कहानी क्या होगी?”

अनाया ने कहा —

“कुछ ऐसा होना चाहिए जो सबको पसंद आए।”

प्रतिमा ने धीरे से कहा —

“अगर हम स्कूल लाइफ पर ड्रामा करें तो?”

ऋषभ ने सिर हिलाया —

“हाँ… relatable रहेगा।”

धीरे-धीरे बातचीत शुरू हो गई।

अब चारों रोज़ मिलने लगे।

कभी लाइब्रेरी में, कभी मैदान के किनारे, और कभी खाली क्लास में।

स्क्रिप्ट धीरे-धीरे आकार लेने लगी।

प्रफुल्ल मजेदार सीन जोड़ता…

अनाया नए आइडिया देती…

प्रतिमा कहानी को व्यवस्थित करती…

और ऋषभ सब कुछ लिखता जाता।

इन बैठकों के दौरान चारों के बीच अच्छी दोस्ती बनने लगी।

ऋषभ ने महसूस किया कि प्रतिमा बहुत समझदार थी।

वह कम बोलती थी, लेकिन उसकी हर बात मायने रखती थी।

एक दिन चारों लाइब्रेरी में बैठे थे।

प्रतिमा स्क्रिप्ट लिख रही थी, और ऋषभ ध्यान से देख रहा था।

अनाया ने कहा —

“प्रतिमा… तुम बहुत अच्छा लिखती हो।”

प्रतिमा हल्का सा मुस्कुरा दी।

ऋषभ ने धीरे से कहा —

“हाँ… बहुत natural लगता है।”

प्रतिमा ने पहली बार उसकी तरफ देखकर मुस्कुराया।

वह छोटा सा पल… ऋषभ के लिए खास बन गया।

कुछ ही दिनों में स्क्रिप्ट पूरी हो गई।

अब रोल तय करने की बारी थी।

चारों ने मिलकर रोल तय किए।

किसे क्या करना है, किसका कौन सा सीन होगा — सब तय हो गया।

अब सब बच्चे रिहर्सल के लिए भी तैयार थे।

लेकिन तभी एक दिन अचानक स्कूल में घोषणा हुई —

"कुछ कारणों की वजह से इस बार वार्षिक समारोह स्थगित किया जा रहा है।"

पूरी क्लास चुप हो गई।

कुछ बच्चों ने निराश होकर एक-दूसरे की तरफ देखा।

प्रफुल्ल ने धीरे से कहा —

"मतलब… ड्रामा भी नहीं होगा?"

अनाया ने हल्के से कहा —

"शायद नहीं…"

ऋषभ और प्रतिमा दोनों चुप थे।

स्क्रिप्ट तैयार थी…

रोल तय हो चुके थे…

रिहर्सल शुरू होने ही वाली थी…

लेकिन अब सब अचानक रुक गया था।

फिर भी… उस ड्रामा ने कुछ बदल दिया था।

चारों के बीच एक नई दोस्ती बन चुकी थी।

और ऋषभ और प्रतिमा के बीच…

वह खामोशी अब पहले जैसी नहीं रही थी।

अब जब वे क्लास में मिलते…

तो हल्की सी मुस्कान अपने-आप आ जाती।

कभी-कभी बिना बोले भी बहुत कुछ समझ में आने लगा था।

कभी-कभी दो लोग बिना ज्यादा बात किए भी करीब आ जाते हैं।

ऋषभ को अब महसूस होने लगा था कि उसकी जिंदगी की यह कहानी धीरे-धीरे किसी नई दिशा में जा रही है।

और शायद…

प्रतिमा भी उसी दिशा में चल रही थी।

बस दोनों को अभी तक यह नहीं पता था…

कि यह रास्ता उन्हें कहाँ ले जाएगा।

Chapter 5

THE TURNING POINT

समय की सबसे अजीब बात यह होती है कि वह कब धीरे-धीरे निकल जाता है, किसी को पता ही नहीं चलता।

दिन हफ्तों में बदले… हफ्ते महीनों में… और देखते ही देखते दो साल गुजर गए।

क्लास 9 से लेकर क्लास 10 तक का सफर कब खत्म हो गया, यह ऋषभ और प्रतिमा दोनों को शायद ही महसूस हुआ।

स्कूल वही था…

क्लास वही थी…

दोस्त वही थे…

और उनकी खामोश कहानी भी वैसे ही चलती रही।

कभी छोटी-सी बातचीत…

कभी एक हल्की-सी मुस्कान…

और कभी बस दूर से देख लेना।

इन दो सालों में बहुत कुछ बदला — पढ़ाई का दबाव बढ़ा, जिम्मेदारियाँ बढ़ीं, सपने बड़े हुए…

लेकिन एक चीज़ नहीं बदली — ऋषभ और प्रतिमा के बीच का अनकहा रिश्ता।

दोनों एक-दूसरे को समझने लगे थे, बिना ज्यादा बोले।

लेकिन फिर भी… उन्होंने कभी अपने मन की बात एक-दूसरे से नहीं कही।

जैसे दोनों इस रिश्ते को शब्द देने से डरते हों।

या शायद… उन्हें डर था कि कहीं शब्द सब कुछ बदल न दें।

फिर आया क्लास 10 का बोर्ड एग्जाम।

पूरा स्कूल जैसे एक अलग ही माहौल में था।

हर तरफ पढ़ाई की बातें… नोट्स… टेस्ट… और तैयारी।

ऋषभ भी मेहनत कर रहा था।

लेकिन इस बार उसके मन में कुछ अलग था।

वह पहले जितना आत्मविश्वासी नहीं लग रहा था।

कभी-कभी वह पढ़ाई करते-करते खो जाता…

जैसे उसके मन में कुछ चल रहा हो, जिसे वह खुद भी समझ नहीं पा रहा था।

और फिर वह दिन आया…

जिसका सबको इंतज़ार था — रिजल्ट का दिन।

स्कूल के नोटिस बोर्ड के सामने बच्चों की भीड़ लगी हुई थी।

सब अपने-अपने नंबर ढूंढ रहे थे।

कुछ चेहरों पर खुशी थी…

कुछ पर निराशा…

कुछ चुपचाप खड़े थे…

कुछ ही देर में खबर पूरे स्कूल में फैल गई —

प्रतिमा फिर से टॉपर बनी थी।

यह कोई नई बात नहीं थी।

पिछले कई सालों से वह हमेशा टॉप करती आई थी।

टीचर्स उसकी तारीफ कर रहे थे…

दोस्त उसे बधाई दे रहे थे…

लेकिन उसी भीड़ में एक नाम ऐसा भी था…

जो इस बार सबको चौंका रहा था।

ऋषभ।

इस बार वह टॉप 10 में भी नहीं था।

जो लड़का हमेशा सबसे आगे रहता था…

वह इस बार कहीं पीछे रह गया था।

कई लोग हैरान थे।

कुछ धीरे-धीरे बातें भी कर रहे थे।

लेकिन ऋषभ वहाँ ज्यादा देर नहीं रुका।

वह चुपचाप स्कूल से बाहर चला गया।

शायद वह खुद भी समझ नहीं पा रहा था कि उसके अंदर क्या चल रहा है।

“कभी-कभी हार हमें दूसरों से नहीं… खुद से मिलती है।”

रिजल्ट के बाद स्कूल में छुट्टियाँ शुरू हो गईं।

कुछ हफ्तों तक स्कूल खाली-सा रहा।

लेकिन जब नई क्लास शुरू हुई…

तो सब वापस लौट आए।

क्लास 11।

नई किताबें…

नए सपने…

और एक नई शुरुआत।

लेकिन इस बार एक चीज़ अलग थी।

ऋषभ स्कूल में नहीं था।

पहले दिन किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

दूसरे दिन भी नहीं।

लेकिन धीरे-धीरे सबको महसूस होने लगा कि वह सच में नहीं आया।

प्रफुल्ल भी थोड़ा चिंतित था।

उसने कुछ बच्चों से पूछा… लेकिन किसी को कुछ पता नहीं था।

उधर क्लास में एक नया लड़का आया था।

उसका नाम था — विवान।

पहली नज़र में ही वह बाकी बच्चों से अलग लगता था।

उसका स्वभाव थोड़ा अलग था।

वह अक्सर टीचर्स की बातों को हल्के में लेता…

क्लास में पढ़ाई से ज्यादा मज़ाक करता…

और कई बार टेस्ट में चीटिंग करते हुए भी पकड़ा जाता।

लेकिन उसके अंदर एक चीज़ बहुत ज्यादा थी — आत्मविश्वास।

वह बिना झिझक के किसी से भी बात कर लेता था।

कुछ ही दिनों में वह पूरे क्लास में चर्चित हो गया।

धीरे-धीरे उसने कई बच्चों से दोस्ती कर ली।

और एक दिन उसने प्रतिमा से भी बात करना शुरू कर दिया।

शुरुआत में यह सब सामान्य था।

लेकिन फिर एक दिन स्कूल में एक अजीब-सी अफवाह फैलने लगी।

पहले दो-तीन बच्चों ने आपस में बात की…

फिर धीरे-धीरे पूरी क्लास में वही बात होने लगी।

लोग कह रहे थे —

विवान ने प्रतिमा को प्रपोज़ किया है।

और…

प्रतिमा ने उसे हाँ भी कह दिया है।

जब यह बात प्रतिमा के दोस्तों तक पहुँची…

तो वे भी हैरान रह गए।

अनाया ने प्रतिमा से पूछना चाहा…

लेकिन प्रतिमा ने सिर्फ मुस्कुराकर बात टाल दी।

किसी को सही सच्चाई नहीं पता थी।

लेकिन अफवाहें फैलती जा रही थीं।

प्रतिमा हमेशा की तरह शांत थी।

उसने इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहा।

लेकिन उसके चेहरे पर कभी-कभी एक अजीब-सी उलझन जरूर दिखाई देती थी।

जैसे वह खुद भी किसी सोच में डूबी हो।

और शायद…

अगर उस समय ऋषभ वहाँ होता…

तो बहुत सी बातें अलग होतीं।

लेकिन वह वहाँ नहीं था।

"कभी-कभी सही समय पर चुप रह जाना भी एक गलती बन जाता है।"

ऋषभ की अनुपस्थिति में स्कूल की कहानी एक नए मोड़ पर पहुँच चुकी थी।

और अब सवाल यह था —

क्या यह अफवाह सच थी?

या फिर यह कहानी अभी कुछ और मोड़ लेने वाली थी…

Chapter 6

THE RETURN

रिज़ल्ट के बाद की छुट्टियाँ धीरे-धीरे खत्म हो चुकी थीं।

स्कूल में क्लास 11 की शुरुआत हो गई थी।

नए बैग, नई किताबें और नई स्ट्रीम के साथ हर कोई अपनी नई दिशा चुन रहा था।

लेकिन इस बार एक चेहरा स्कूल में दिखाई नहीं दे रहा था — ऋषभ।

कई दिनों तक वह स्कूल नहीं आया।

क्लास में उसके दोस्त कभी-कभी उसके बारे में बात करते थे।

प्रफुल्ल भी थोड़ा चिंतित रहने लगा था।

असल में इन छुट्टियों के दौरान ऋषभ के मन में एक बड़ा विचार चल रहा था।

क्लास 10 का रिज़ल्ट उसे कहीं न कहीं अंदर तक प्रभावित कर गया था।

जो लड़का हमेशा सबसे आगे रहता था…

वह इस बार पीछे रह गया था।

उसे लगता था कि शायद अब लोग उसे पहले जैसी नज़र से नहीं देखते होंगे।

शायद टीचर्स की उम्मीदें भी बदल गई होंगी।

और सबसे ज्यादा… वह खुद से थोड़ा निराश था।

इन्हीं सोचों के बीच उसके मन में एक विचार आया —

शायद उसे स्कूल बदल देना चाहिए।

एक नई जगह…

नए लोग…

नई शुरुआत…

उसे लगा शायद इससे वह सब कुछ पीछे छोड़ पाएगा।

कुछ दिनों तक उसने इस बारे में गंभीरता से सोचा भी।

घर में बात करने की भी कोशिश की।

लेकिन हालात ऐसे बने कि वह स्कूल बदल नहीं पाया।

धीरे-धीरे उसने महसूस किया —

शायद भागने से कुछ नहीं बदलता।

कभी-कभी वापस जाकर ही खुद को साबित करना पड़ता है।

कई दिनों की उलझन के बाद उसने फैसला किया —

वह वापस उसी स्कूल जाएगा।

कुछ दिनों की देरी के बाद एक सुबह वह फिर से उदयपुर कॉन्वेंट स्कूल के गेट से अंदर गया।

सब कुछ पहले जैसा ही था —

वही बड़ा मैदान…

वही लंबी गलियारे…

वही क्लासरूम…

लेकिन ऋषभ को सब कुछ थोड़ा अलग महसूस हो रहा था।

जैसे वह एक ही जगह पर लौटकर भी नया सफर शुरू कर रहा हो।

अब सब लोग अपनी-अपनी स्ट्रीम चुन चुके थे।

किसी ने आर्ट्स ली थी…

किसी ने कॉमर्स…

और कई बच्चों ने साइंस।

ऋषभ कुछ देर तक नोटिस बोर्ड के सामने खड़ा रहा।

वह सोच रहा था कि उसे कौन-सी स्ट्रीम लेनी चाहिए।

आखिरकार उसने कॉमर्स विद मैथ्स चुन लिया।

मैथ्स हमेशा से उसका पसंदीदा विषय था।

वह इसे छोड़ना नहीं चाहता था।

कुछ देर बाद उसे पता चला —

प्रतिमा ने साइंस विद मैथ्स ली है।

यह सुनकर उसके मन में हल्की-सी अजीब भावना आई।

मतलब अब उनकी क्लास अलग थी…

पढ़ाई का रास्ता अलग था…

शायद अब मिलने के मौके भी कम हो जाएंगे।

लेकिन कहानी यहाँ खत्म नहीं हुई थी।

क्योंकि एक चीज़ अब भी समान थी — मैथ्स की कोचिंग।

ऋषभ ने फिर से वही मैथ्स कोचिंग जॉइन की, जहाँ वह पहले जाता था।

पहले दिन जब वह कोचिंग पहुँचा, तो कमरे में नज़र घुमाई।

कुछ पुराने चेहरे दिखाई दिए।

और फिर सामने वाली बेंच पर बैठा हुआ दिखा — प्रफुल्ल।

प्रफुल्ल ने उसे देखते ही मुस्कुराकर कहा —

"अरे! तू आ गया?"

ऋषभ ने भी हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया —

"हाँ… बस थोड़ा लेट हो गया।"

दोनों साथ बैठकर पढ़ाई करने लगे।

लेकिन कुछ मिनट बाद दरवाज़ा खुला।

और अंदर आई — प्रतिमा।

वह हमेशा की तरह शांत थी।

उसके हाथ में किताबें थीं।

वह सीधे अपनी सीट पर जाकर बैठ गई।

कुछ पल के लिए ऋषभ की नज़र उस पर ठहर गई।

दो सालों की वही खामोश कहानी जैसे फिर से सामने आ खड़ी हुई थी।

अब हालात पहले जैसे नहीं थे।

स्ट्रीम अलग थीं…

क्लास अलग थीं…

लेकिन मैथ्स की कोचिंग अब भी वही थी।

कुछ दिनों तक सब सामान्य चलता रहा।

कोचिंग में पढ़ाई…

कभी-कभी छोटे सवाल…

और वही पुरानी खामोशी।

लेकिन अब वह खामोशी पहले से थोड़ी अलग थी।

जैसे दोनों के मन में कुछ अनकहे सवाल हों।

फिर एक दिन प्रफुल्ल ने अचानक एक बात छेड़ दी।

कोचिंग खत्म होने के बाद वे दोनों बाहर खड़े थे।

शाम की हल्की हवा चल रही थी।

प्रफुल्ल थोड़ा झिझकते हुए बोला —

“तुझे एक बात पता है?”

ऋषभ ने पूछा —

“क्या?”

प्रफुल्ल ने धीरे से कहा —

“स्कूल में कुछ बातें चल रही हैं…”

ऋषभ ने उसकी तरफ देखा —

“कौन सी बातें?”

प्रफुल्ल थोड़ा रुका…

फिर धीरे से बोला —

“लोग कह रहे हैं कि उस नए लड़के… विवान ने प्रतिमा को प्रपोज़ किया है।”

ऋषभ चुप हो गया।

लेकिन प्रफुल्ल ने बात पूरी की —

“और… शायद उसने हाँ भी कह दी है।”

कुछ सेकंड तक दोनों के बीच कोई आवाज़ नहीं थी।

सड़क पर लोग आ-जा रहे थे…

गाड़ियाँ गुजर रही थीं…

लेकिन ऋषभ जैसे कहीं और खो गया था।

उसने कुछ नहीं कहा।

बस धीरे से आसमान की तरफ देखा।

शायद उसके मन में कई सवाल उठ रहे थे।

दो साल की वह खामोश कहानी…

जिसमें कभी किसी ने कुछ कहा नहीं था…

अब शायद किसी और मोड़ पर पहुँच चुकी थी।

“कभी-कभी जो बात हम कह नहीं पाते…

वही बात जिंदगी किसी और से कहलवा देती है।”

ऋषभ ने उस दिन कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

लेकिन उसके अंदर कहीं न कहीं एक हल्की-सी बेचैनी जरूर पैदा हो चुकी थी।

और उसे अभी तक यह नहीं पता था —

कि आगे आने वाले दिन उसकी जिंदगी की कहानी को और भी बदलने वाले थे।

Chapter 7
THE CONFESSION

कभी-कभी कुछ सवाल ऐसे होते हैं जो मन में बार-बार उठते हैं, और जब तक उनका जवाब न मिल जाए, तब तक मन को चैन नहीं मिलता।

ऋषभ के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था।

जब से उसने विवान और प्रतिमा के बारे में वो अफवाह सुनी थी, तब से उसके मन में एक अजीब-सी बेचैनी रहने लगी थी।

क्लास में बैठा होता तो ध्यान पढ़ाई में कम और सोच में ज़्यादा होता।

कोचिंग में जाता तो कई बार अनजाने में उसकी नज़र प्रतिमा पर चली जाती।

लेकिन हर बार वही सवाल सामने आ जाता —

“क्या यह सच है?”

कई दिनों तक उसने खुद को समझाने की कोशिश की।

शायद यह सिर्फ अफवाह हो…

शायद लोग बस बातें बना रहे हों…

लेकिन उसके मन को सच्चाई जाननी ही थी।

दिन गुजरते गए…

और हर दिन उसकी बेचैनी थोड़ी और बढ़ती गई।

आख़िरकार एक दिन उसने हिम्मत करके प्रफुल्ल से कहा —

“क्या तुम्हारे पास… प्रतिमा का नंबर है?”

प्रफुल्ल ने उसे थोड़ी देर तक देखा।

शायद वह समझ गया था कि ऋषभ के मन में क्या चल रहा है।

उसने बिना ज़्यादा सवाल किए अपना फोन निकाला और नंबर दे दिया।

“ले… लेकिन सोच समझकर बात करना।”

ऋषभ ने हल्के से सिर हिलाया।

उस शाम स्कूल खत्म होने के बाद वह घर पहुँचा।

कमरे में हल्की-सी खामोशी थी।

उसने फोन उठाया… फिर वापस रख दिया।

कुछ मिनट तक वह बस स्क्रीन को देखता रहा।

दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

आख़िरकार उसने WhatsApp खोला और नंबर सेव किया।

नाम लिखा — Pratima

कुछ सेकंड तक वह सोचता रहा कि क्या लिखे।

फिर उसने धीरे-धीरे एक छोटा सा मैसेज टाइप किया —

“Hi… Rishabh here.”

मैसेज भेजने के बाद उसका दिल और तेज़ धड़कने लगा।

कुछ मिनट तक कोई जवाब नहीं आया।

फिर अचानक फोन पर नोटिफिकेशन आया —

“Hi.”

बस एक छोटा सा जवाब।

लेकिन ऋषभ के लिए वह भी बहुत था।

धीरे-धीरे बातचीत शुरू हुई।

पहले स्कूल की बातें…

फिर पढ़ाई की बातें…

फिर कोचिंग की बातें…

कुछ देर बाद ऋषभ ने हिम्मत जुटाई।

उसने मैसेज टाइप किया… फिर मिटाया…

फिर दोबारा लिखा… फिर मिटाया…

आख़िरकार उसने भेज दिया —

“एक बात पूछूँ…?”

प्रतिमा का जवाब आया —

“हाँ।”

कुछ सेकंड तक वह सोचता रहा।

फिर उसने लिख दिया —

“स्कूल में जो बातें चल रही हैं… विवान के बारे में… क्या वो सच हैं?”

मैसेज भेजते ही जैसे उसके अंदर सब कुछ रुक गया।

कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया।

वे कुछ सेकंड उसे बहुत लंबे लगे।

फिर प्रतिमा का मैसेज आया —

“हाँ… वो सच है।”

यह पढ़कर ऋषभ कुछ सेकंड तक फोन की स्क्रीन को देखता रहा।

जैसे उसके मन में कुछ टूट गया हो।

लेकिन उसके मन में अब भी बहुत कुछ था जो वह कहना चाहता था।

काफी देर की चुप्पी के बाद उसने एक और मैसेज लिखा —

“मुझे नहीं पता यह कहना सही है या नहीं… लेकिन मैं तुम्हें बहुत समय से पसंद करता हूँ।”

यह शायद पहली बार था जब उसने अपने मन की बात किसी से कही थी।

कुछ मिनट तक फोन शांत रहा।

फिर प्रतिमा का लंबा मैसेज आया।

उसने लिखा —

“तुम्हें शायद पता नहीं है… लेकिन क्लास 9 और 10 के वो दो साल मैंने कैसे बिताए हैं।”

ऋषभ ध्यान से पढ़ने लगा।

प्रतिमा ने लिखा —

"मैं भी तुम्हें पसंद करती थी। शायद बहुत पहले से। लेकिन तुमने कभी कुछ कहा नहीं… और मैंने भी नहीं।"

ऋषभ की आँखें स्क्रीन पर टिक गईं।

मैसेज आगे बढ़ा —

"जब क्लास 11 शुरू हुई और तुम स्कूल नहीं आए… मैं सच में बहुत परेशान थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है।"

कुछ सेकंड बाद अगला मैसेज आया —

"फिर उसी समय विवान ने मुझसे बात करना शुरू किया। उसने मुझे प्रपोज़ किया।"

ऋषभ चुपचाप पढ़ता रहा।

प्रतिमा ने आगे लिखा —

"शायद मैं तुम्हारे बारे में बहुत सोचती थी… और उसी से बाहर निकलने के लिए मैंने उसका प्रपोज़ल स्वीकार कर लिया।"

कुछ देर बाद उसका आखिरी मैसेज आया —

"अब मैं उसके साथ रिलेशनशिप में हूँ। और मैं उसके साथ गलत नहीं कर सकती।"

कुछ सेकंड बाद एक और मैसेज आया —

"लेकिन अगर तुम चाहो… तो हम दोस्त रह सकते हैं।"

फोन की स्क्रीन पर बातचीत खत्म हो चुकी थी।

लेकिन ऋषभ के मन में जैसे हजारों विचार चल रहे थे।

दो साल की वह खामोश कहानी…

जिसमें दोनों के दिल में भावनाएँ थीं…

लेकिन किसी ने कुछ कहा नहीं…

आज आखिरकार शब्दों में सामने आ चुकी थी।

"कभी-कभी सही समय पर कही गई एक बात पूरी कहानी बदल सकती है…

और देर से कही गई वही बात सिर्फ एक याद बनकर रह जाती है।"

उस रात ऋषभ देर तक जागता रहा।

फोन की स्क्रीन बार-बार खोलता… फिर बंद कर देता।

अब सच्चाई उसके सामने थी।

लेकिन अब सवाल यह था —

क्या वह सच में सिर्फ दोस्त बनकर रह पाएगा?

Chapter 8

THE DISTANCE

उस रात के बाद सब कुछ जैसे बदल गया था।

ऋषभ को आखिरकार वह जवाब मिल चुका था जिसका उसे इतने दिनों से इंतज़ार था। लेकिन सच्चाई कभी-कभी उम्मीद से ज्यादा भारी होती है।

फोन की स्क्रीन पर वह आखिरी मैसेज बार-बार उसके मन में गूंज रहा था—

"अगर तुम चाहो... तो हम दोस्त रह सकते हैं।"

ऋषभ जानता था कि प्रतिमा ने जो कहा था, वह गलत नहीं था। उसने सच बताया था... और ईमानदारी से बताया था। लेकिन दिल को समझाना इतना आसान नहीं होता।

उस रात वह देर तक जागता रहा।

फोन हाथ में था, लेकिन अब कहने को कुछ बचा नहीं था।

कई बार उसने चैट खोली... फिर बंद कर दी।

कभी लगा कि कुछ लिखे... फिर लगा कि शायद चुप रहना ही बेहतर है।

सुबह जब वह उठा, तो सब कुछ सामान्य था।

लेकिन उसके अंदर कुछ बदल चुका था।

अगले दिन जब ऋषभ स्कूल गया, तो सब कुछ पहले जैसा ही था।

वही क्लास, वही दोस्त, वही शोर।

लेकिन उसके अंदर एक खामोशी आ चुकी थी।

अब जब वह क्लास में बैठता, तो कभी-कभी उसकी नज़र अनजाने में प्रतिमा पर चली जाती।

लेकिन अब वह जल्दी से नज़र हटा लेता।

शायद इसलिए क्योंकि अब उसे सच्चाई पता थी।

दूसरी तरफ प्रतिमा भी पहले जैसी ही थी —

शांत, पढ़ाई में डूबी हुई, कम बोलने वाली।

लेकिन अब उनके बीच एक नई दूरी आ चुकी थी।

पहले उनकी खामोशी में एक उम्मीद थी।

अब उस खामोशी में एक अधूरापन था।

कोचिंग में भी सब कुछ सामान्य दिखता था।

प्रफुल्ल, ऋषभ और बाकी बच्चे पढ़ाई करते, सवाल पूछते, कभी-कभी मज़ाक भी करते।

लेकिन ऋषभ पहले जैसा नहीं रहा था।

अब वह ज्यादा चुप रहने लगा था।

एक दिन प्रफुल्ल ने उससे पूछा —

"तुमने उससे बात की?"

ऋषभ ने हल्के से सिर हिलाया।

“हाँ।”

“फिर?”

कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद ऋषभ ने कहा —

“वो विवान के साथ है।”

प्रफुल्ल ने धीरे से कहा —

“ओह...”

फिर कुछ देर दोनों चुप रहे।

थोड़ी देर बाद प्रफुल्ल बोला —

“तू ठीक है?”

ऋषभ हल्का सा मुस्कुराया।

“हाँ... ठीक हूँ।”

लेकिन प्रफुल्ल जानता था कि यह मुस्कान पूरी तरह सच्ची नहीं थी।

दिन धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए।

ऋषभ ने खुद को पढ़ाई में ज्यादा व्यस्त करना शुरू कर दिया।

मैथ्स के सवाल हल करना, नोट्स बनाना, और अपने आप को बेहतर बनाने की कोशिश करना।

शायद यही उसका तरीका था अपने मन को संभालने का।

धीरे-धीरे उसने खुद को बदलना शुरू कर दिया।

अब वह क्लास में कम बोलता था।

लंच ब्रेक में भी ज्यादा समय किताबों के साथ बिताने लगा था।

कभी-कभी दोस्त उसे बुलाते —

लेकिन वह हल्की मुस्कान के साथ मना कर देता।

एक दिन स्कूल के मैदान में खड़े होकर वह बच्चों को खेलते हुए देख रहा था।

हवा हल्की-सी चल रही थी।

उसी समय उसकी नज़र दूर खड़ी प्रतिमा पर पड़ी।

वह अपनी दोस्तों के साथ बात कर रही थी।

कभी हल्की-सी हँसी… कभी कुछ कहते हुए हाथ हिलाना…

कुछ सेकंड के लिए ऋषभ बस उसे देखता रहा।

फिर उसने धीरे से अपनी नज़र दूसरी तरफ घुमा ली।

क्योंकि अब वह जानता था —

कुछ कहानियाँ शुरू तो होती हैं...

लेकिन उनका अंत वही नहीं होता जो हम सोचते हैं।

उस दिन घर लौटते समय रास्ता पहले जैसा ही था।

लेकिन उसके कदम पहले से थोड़े धीमे थे।

जैसे वह कुछ पीछे छोड़कर आगे बढ़ रहा हो।

“हर प्रेम कहानी का अंत साथ होना नहीं होता...

कुछ कहानियाँ हमें मजबूत बनाने के लिए अधूरी ही रह जाती हैं।”

दिन गुजरते गए…

और धीरे-धीरे ऋषभ ने इस सच्चाई को स्वीकार करना शुरू कर दिया।

अब वह पहले की तरह हर पल उसके बारे में नहीं सोचता था।

लेकिन जब भी याद आती... एक हल्की-सी मुस्कान और एक छोटा-सा खालीपन साथ आ जाता।

लेकिन ऋषभ की कहानी अभी खत्म नहीं हुई थी।

शायद यह सिर्फ उसकी जिंदगी के एक नए अध्याय की शुरुआत थी।

और आने वाले समय में उसे अभी बहुत कुछ सीखना था —

अपने बारे में...

लोगों के बारे में...

और जिंदगी के बारे में।

एक अधूरी कहानी

कुछ बातें दिल में ही रह गईं,

कुछ खामोशियाँ कहानियाँ बन गईं।

दो साल की वो अनकही सी चाहत,

बस यादों की निशानियाँ बन गईं।

नज़रें मिलती थीं चुपके-चुपके,

बातें मगर कभी हो न सकीं।

दिल में कितने शब्द थे शायद,

पर होंठों तक वो आ न सकीं।

वक़्त गुजरता रहा चुपचाप,

जैसे कोई राज़ छुपाता हो।

दो दिलों के बीच की दूरी को

बस खामोशी ही समझ पाता हो।

फिर एक दिन सच सामने आया,

जैसे आईना कोई टूट गया।

जो सपना चुपके-चुपके पलता था,

वो पल भर में ही रूठ गया।

वो बोली —

"हाँ, कभी तुम भी अच्छे लगते थे...

शायद बहुत पहले से।

पर जब तुम दूर चले गए,

दिल को किसी सहारे की ज़रूरत थी।"

उसकी हर बात सही थी शायद,

उसका फैसला भी गलत नहीं था।

पर दिल के कुछ कोनों में फिर भी

एक खालीपन कम नहीं था।

दोस्ती का रिश्ता बचा रहा,

पर एहसास कहीं खो सा गया।

एक अधूरी सी प्रेम कहानी का

बस साया सा रह गया।

"कभी-कभी प्यार गलत नहीं होता,

बस वक़्त सही नहीं होता।"

Chapter 9

THE NORMAL DAYS

समय की सबसे अच्छी बात यह होती है कि वह हर दर्द को धीरे-धीरे हल्का कर देता है।

ऋषभ और प्रतिमा के बीच हुई उस बातचीत के बाद कुछ दिनों तक सब थोड़ा अजीब रहा।

लेकिन धीरे-धीरे चीजें सामान्य होने लगीं।

अब वे पहले की तरह एक-दूसरे से बचते नहीं थे।

कभी स्कूल के कॉरिडोर में हल्की-सी मुस्कान…

कभी क्लास के बाद छोटी-सी बातचीत…

और कभी-कभी WhatsApp पर लंबी चैट्स।

शुरुआत में बातें सिर्फ पढ़ाई तक सीमित रहती थीं।

मैथ्स के सवाल, कोचिंग के नोट्स, या आने वाले टेस्ट की तैयारी।

लेकिन धीरे-धीरे बातचीत का दायरा बढ़ने लगा।

अब वे अपने भविष्य के सपनों के बारे में भी बात करने लगे।

एक दिन रात को चैट करते हुए प्रतिमा ने पूछा —

“तुम आगे क्या बनना चाहते हो?”

ऋषभ ने कुछ सेकंड सोचकर लिखा —

"अभी तो पता नहीं… लेकिन कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिससे जिंदगी में कुछ बड़ा कर सकूँ।"

प्रतिमा ने जवाब दिया —

"तुम कर सकते हो… तुम हमेशा से अलग रहे हो।"

ऋषभ कुछ देर तक स्क्रीन को देखता रहा।

कभी-कभी किसी का भरोसा भी दिल को एक अलग सुकून दे देता है।

कभी-कभी उनकी बातचीत बहुत हल्की और मज़ाकिया भी हो जाती।

किसी टीचर के अजीब से डायलॉग पर मज़ाक…

किसी दोस्त की फनी आदत पर हँसी…

कई बार वे एक-दूसरे का मज़ाक भी उड़ा देते थे।

और फिर उसी बात पर देर तक हँसते रहते।

स्कूल के खाली पीरियड्स भी अब थोड़े खास हो गए थे।

कभी पूरा ग्रुप एक साथ बैठकर बातें करता…

कभी कोई चुटकुला सुनाता…

कभी आने वाले स्कूल फंक्शन की तैयारी होती।

ऋषभ, प्रफुल्ल, प्रतिमा, और अनाया — धीरे-धीरे यह छोटा-सा ग्रुप और करीब आने लगा था।

कभी-कभी वे लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ते…

तो कभी स्कूल के मैदान में खड़े होकर बस यूँ ही बातें करते।

कोचिंग में भी वही माहौल था।

मैथ्स के सवाल, टीचर की सख्त आवाज़, और बीच-बीच में दोस्तों की हँसी।

ऋषभ, प्रफुल्ल और बाकी दोस्त अक्सर साथ बैठते।

और कई बार प्रतिमा भी उसी चर्चा का हिस्सा बन जाती।

अब सब कुछ बाहर से बिल्कुल सामान्य लग रहा था।

लेकिन जिंदगी कभी हमेशा एक जैसी नहीं रहती।

धीरे-धीरे स्कूल में कुछ बातें फिर सुनाई देने लगीं।

इस बार अफवाहें थोड़ी अलग थीं।

लोग कह रहे थे कि प्रतिमा और विवान के बीच सब ठीक नहीं चल रहा है।

शुरुआत में किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

लेकिन कुछ ही दिनों में यह साफ़ होने लगा कि उनके बीच सच में कुछ समस्या है।

विवान पहले जैसा ही था —

मज़ाक करने वाला, थोड़ा लापरवाह, और कई बार पढ़ाई को गंभीरता से न लेने वाला।

जबकि प्रतिमा हमेशा से बहुत फोकस्ड और अनुशासित थी।

दोनों के स्वभाव में यह अंतर धीरे-धीरे सामने आने लगा।

छोटी-छोटी बातों पर बहस होने लगी।

कभी पढ़ाई को लेकर…

कभी समय को लेकर…

और कभी बिना किसी खास वजह के भी।

एक दिन लंच ब्रेक के दौरान कुछ छात्रों को उन्हें बहस करते हुए भी देखा गया।

हालाँकि उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा…

लेकिन माहौल में तनाव साफ महसूस हो रहा था।

फिर एक दिन…

स्कूल में खबर फैल गई कि प्रतिमा और विवान का ब्रेकअप हो गया है।

इस बार भी प्रतिमा ने किसी से कुछ नहीं कहा।

वह पहले की तरह ही शांत थी।

लेकिन जो लोग उसे ध्यान से देखते थे, वे समझ सकते थे कि उसके अंदर कहीं न कहीं एक हल्की-सी उदासी जरूर थी।

ऋषभ को भी यह बात कुछ दिनों बाद पता चली।

उसने इस बारे में उससे कुछ नहीं पूछा।

शायद इसलिए क्योंकि वह जानता था —

कुछ बातें समय के साथ ही ठीक होती हैं।

लेकिन अब उसने एक बात जरूर नोटिस की —

प्रतिमा पहले से ज्यादा चुप रहने लगी थी।

कभी-कभी वह क्लास में खिड़की के बाहर देखती रहती…

जैसे कहीं खो गई हो।

एक दिन नोट्स समझाते समय ऋषभ ने हल्के से कहा —

“यह वाला सवाल ऐसे करो… आसान हो जाएगा।”

प्रतिमा ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा —

“Thanks…”

बस इतना ही।

लेकिन उस छोटे से पल में भी एक नई शुरुआत की झलक थी।

दिन धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए।

दोस्ती पहले से थोड़ी गहरी हो चुकी थी।

अब उनके बीच पहले जैसी झिझक नहीं थी…

लेकिन कुछ भावनाएँ अब भी खामोश थीं।

“कभी-कभी जिंदगी हमें ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है

जहाँ सही और गलत का फैसला दिल नहीं, समय करता है।”

अब उनकी कहानी फिर एक नए मोड़ की तरफ बढ़ रही थी।

दोस्ती पहले से थोड़ी गहरी हो चुकी थी।

लेकिन अब एक सवाल फिर से हवा में तैर रहा था —

क्या यह कहानी फिर से वहीं लौटेगी…

जहाँ से कभी शुरू हुई थी?

Chapter 10

NEW YEAR, NEW MOMENTS

समय के साथ सब कुछ सच में सामान्य हो गया था।

ऋषभ और प्रतिमा अब पहले से कहीं ज्यादा अच्छे दोस्त बन चुके थे।

उनके बीच अब झिझक नहीं थी, लेकिन फिर भी कुछ बातें ऐसी थीं जो अब भी बिना शब्दों के ही समझ में आ जाती थीं।

स्कूल के दिन अब हँसी-मज़ाक, पढ़ाई और दोस्तों के साथ छोटी-छोटी यादों से भरने लगे थे।

खाली पीरियड्स में पूरा ग्रुप एक साथ बैठता।

कोई जोक सुनाता, कोई किसी टीचर की नकल करता, और कभी-कभी किसी छोटी-सी बात पर इतनी हँसी आ जाती कि टीचर बाहर से आकर पूछ लेते —

"यहाँ क्लास चल रही है या कॉमेडी शो?"

सब हँसी रोकने की कोशिश करते, लेकिन फिर भी मुस्कान छिप नहीं पाती।

ऋषभ और प्रतिमा भी उसी ग्रुप का हिस्सा होते।

कभी दोनों एक-दूसरे का मज़ाक उड़ा देते, कभी किसी बात पर हल्की-सी बहस हो जाती, और फिर वही बात हँसी में खत्म हो जाती।

लेकिन इन सबके बीच कुछ पल ऐसे भी होते थे जब दोनों बिना कुछ बोले ही एक-दूसरे को notice कर लेते।

कभी क्लास में नोट्स लिखते-लिखते अचानक नज़र उठती…

और सामने वही चेहरा दिख जाता।

कुछ सेकंड के लिए नज़रें ठहर जातीं।

फिर दोनों ऐसे दिखाने लगते जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

जैसे उनकी आँखों के बीच कोई खामोश बातचीत चल रही हो।

कोचिंग में भी अक्सर ऐसा होता।

जब टीचर बोर्ड पर सवाल हल कर रहे होते, तो कभी-कभी ऋषभ अनजाने में सामने की तरफ देखता।

और कई बार उसे लगता कि प्रतिमा भी उसी पल उसकी तरफ देख रही थी।

फिर दोनों तुरंत अपनी कॉपी में देखने लगते।

"कुछ बातें शब्दों से नहीं... बस एक नज़र से समझ में आ जाती हैं।"

इन सबके बीच WhatsApp पर उनकी बातें भी बढ़ने लगी थीं।

कभी मैथ्स के सवाल, कभी आने वाले एग्जाम की टेंशन, और कभी भविष्य के सपनों की बातें।

कई बार चैट करते-करते रात काफी देर हो जाती।

एक दिन रात को चैट करते हुए प्रतिमा ने लिखा —

"तुम्हें नहीं लगता हमारी जिंदगी बस स्कूल, कोचिंग और मैथ्स में ही घूम रही है?"

ऋषभ ने जवाब दिया —

“हाँ... और मैथ्स भी ऐसा कि समझ आ जाए तो खुश हो जाते हैं।”

प्रतिमा ने हँसते हुए लिखा —

“तुम्हें देखकर लगता है तुम्हें सब समझ आ जाता है।”

“नहीं... बस दिखावा अच्छा कर लेता हूँ।”

दोनों देर तक उसी बात पर मज़ाक करते रहे।

इसी तरह धीरे-धीरे दिसंबर का आखिरी हफ्ता आ गया।

स्कूल में हर जगह नए साल की चर्चा हो रही थी।

कुछ बच्चे नए साल के रिज़ॉल्यूशन की बात कर रहे थे, तो कुछ छुट्टियों की।

एक दिन कोचिंग से बाहर निकलते समय अचानक ऋषभ के मन में एक आइडिया आया।

उसने प्रफुल्ल से कहा —

“क्यों ना इस बार 1 जनवरी की शाम को कोचिंग में छोटी-सी न्यू ईयर पार्टी कर लें?”

प्रफुल्ल पहले थोड़ा चौंका, फिर मुस्कुराया।

“आइडिया अच्छा है... लेकिन करेगा कौन?”

ऋषभ ने कहा —

“हम करेंगे... पूरा ग्रुप।”

अगले दिन यह बात धीरे-धीरे पूरे ग्रुप तक पहुँच गई।

सबको यह आइडिया पसंद आया।

अब शुरू हुई तैयारियाँ।

किसी को सजावट की जिम्मेदारी मिली,

किसी को स्नैक्स लाने की,

किसी को म्यूज़िक का इंतज़ाम करना था।

लेकिन सबसे ज्यादा प्लानिंग जिन लोगों ने की, वे थे —

ऋषभ, प्रफुल्ल और प्रतिमा।

तीनों अक्सर कोचिंग के बाद कुछ देर रुक जाते और सारी तैयारी की बातें करते।

कभी लिस्ट बनती…

कभी खर्चा जोड़ते…

कभी कोई नया आइडिया आता…

और बीच-बीच में वही हँसी-मज़ाक।

कभी प्रफुल्ल मज़ाक करता —

“देखना... पार्टी के बाद टीचर हमें ही क्लास साफ करने को बोलेंगे।”

ऋषभ हँसते हुए कहता —

“तब तुम भाग जाना... मैं संभाल लूँगा।”

प्रतिमा मुस्कुराते हुए कहती —

"हाँ... और बाद में पूरा काम मुझे करना पड़ेगा।"

तीनों हँस पड़ते।

एक दिन जब वे सब सजावट के बारे में बात कर रहे थे, तो प्रतिमा ने कहा —

"अगर कुछ भी गड़बड़ हुआ तो जिम्मेदार तुम दोनों हो।"

ऋषभ ने मुस्कुराते हुए कहा —

"नहीं... जिम्मेदारी बराबर की है।"

प्रतिमा हल्का सा हँस पड़ी।

और उस हँसी में एक अजीब-सी सहजता थी।

फिर आखिरकार 1 जनवरी की शाम आ गई।

कोचिंग का छोटा सा कमरा उस दिन बिल्कुल अलग दिख रहा था।

रंगीन गुब्बारे, हल्की सजावट, और टेबल पर रखे स्नैक्स।

कुछ बच्चों ने हाथ से "Happy New Year" भी लिखकर दीवार पर चिपका दिया था।

सब दोस्त धीरे-धीरे आ गए थे।

कोई फोटो ले रहा था,

कोई गाने चला रहा था,

कोई बस बैठकर हँस रहा था।

कमरा शोर और खुशियों से भर गया था।

ऋषभ एक पल के लिए दरवाज़े के पास खड़ा होकर सबको देख रहा था।

फिर उसकी नज़र सामने खड़ी प्रतिमा पर गई।

वह अपने दोस्तों के साथ बात करते-करते अचानक उसकी तरफ देखी।

कुछ सेकंड के लिए दोनों की नज़रें मिलीं।

फिर दोनों हल्का सा मुस्कुरा दिए।

बिना कुछ कहे।

उस पल में जैसे बहुत कुछ कह दिया गया था।

शायद दोस्ती...

शायद समझ...

या शायद कुछ और।

"कभी-कभी सबसे खूबसूरत पल वही होते हैं जिनमें शब्दों की जरूरत नहीं पड़ती।"

उस शाम सबने बहुत मज़े किए।

फोटो, हँसी, म्यूज़िक, और दोस्तों के साथ बिताए कुछ सादे लेकिन यादगार पल।

किसी ने कहा —

"यार... यह पार्टी हर साल होनी चाहिए।"

सबने हँसते हुए हामी भर दी।

शायद उस समय किसी को यह एहसास नहीं था कि आने वाले समय में यही पल उनकी सबसे खूबसूरत यादें बनने वाले हैं।

पार्टी खत्म होने के बाद धीरे-धीरे सब जाने लगे।

ऋषभ बाहर निकलते हुए एक बार फिर पीछे मुड़ा।

कमरा अब खाली था...

लेकिन वहाँ की हँसी अब भी जैसे हवा में बाकी थी।

और ऋषभ की कहानी...

अब धीरे-धीरे एक और नए मोड़ की तरफ बढ़ रही थी।

Chapter 11

A FRIENDSHIP THAT NEVER ENDS

हर कहानी में कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जो धीरे-धीरे बनते हैं, लेकिन जिंदगी भर साथ रहते हैं।

ऋषभ की जिंदगी में ऐसा ही एक रिश्ता था — प्रफुल्ल के साथ उसकी दोस्ती।

दोनों का घर लगभग पास-पास ही था।

इसलिए लगभग हर सुबह एक जैसा ही दृश्य होता था।

सुबह स्कूल जाने से पहले प्रफुल्ल अपने घर के बाहर खड़ा होकर आवाज़ लगाता —

"ऋषभ... चल!"

और कुछ ही सेकंड में ऋषभ बैग लेकर बाहर आ जाता।

फिर दोनों साथ-साथ स्कूल के रास्ते पर निकल पड़ते।

सुबह की ठंडी हवा, खाली सड़कें, और दोनों दोस्तों की अंतहीन बातें —

यही उनकी रोज़ की शुरुआत थी।

रास्ते भर बातें चलती रहतीं।

कभी पढ़ाई की बातें…

कभी किसी टीचर के अजीब से डायलॉग पर हँसी…

कभी क्रिकेट की चर्चा…

और कभी बस यूँ ही बेवजह की बातें।

कभी-कभी तो वे इतनी बातों में खो जाते कि स्कूल कब आ गया, पता ही नहीं चलता।

स्कूल में भी दोनों अक्सर साथ ही बैठते।

क्लास में नोट्स शेयर करना…

एक-दूसरे से सवाल पूछना…

और खाली पीरियड्स में साथ बैठकर मज़ाक करना —

यह सब उनकी दोस्ती का हिस्सा बन चुका था।

लंच ब्रेक में भी दोनों अक्सर साथ ही होते।

कभी पूरा ग्रुप साथ बैठता,

तो कभी सिर्फ दोनों ही किसी कोने में बैठकर बातें करते।

स्कूल के बाद भी यही कहानी होती।

घर लौटते समय अक्सर दोनों रास्ते में किसी छोटी-सी दुकान पर रुक जाते।

कभी समोसा…

कभी पकोड़ी…

कभी चाय या कोल्ड ड्रिंक…

और फिर शुरू होता उनका सबसे मजेदार झगड़ा।

जब पैसे देने की बारी आती, तो दोनों एक साथ बोलते —

"मैं दूँगा!"

प्रफुल्ल कहता —

“अरे रहने दे, आज मैं दे रहा हूँ।”

ऋषभ तुरंत बोलता —

“नहीं... आज मेरी बारी है।”

और कई बार तो यह झगड़ा इतना बढ़ जाता कि दुकानदार खुद ही हँसने लगता।

आखिरकार किसी एक को हार माननी पड़ती।

लेकिन यह झगड़ा हर बार फिर से होता।

क्योंकि यह झगड़ा पैसे का नहीं…

दोस्ती का था।

घर पहुँचने के बाद भी उनकी मुलाकात खत्म नहीं होती थी।

शाम को फिर दोनों साथ ही कोचिंग जाने के लिए निकल पड़ते।

रास्ते में फिर वही लंबी बातें।

कभी भविष्य के सपनों की चर्चा…

कभी जिंदगी के बारे में गहरी बातें…

और कभी बस चुपचाप साथ चलते रहना।

कई बार ऐसा भी होता कि दोनों कुछ देर तक बिना कुछ बोले चलते रहते।

लेकिन वह खामोशी भी अजीब तरह से सुकून भरी होती।

“सच्ची दोस्ती में हर बात कहनी जरूरी नहीं होती…

कभी-कभी खामोशी भी बहुत कुछ कह जाती है।”

कोचिंग से लौटकर दोनों अपने-अपने घर चले जाते।

लेकिन फिर भी उनकी बातचीत यहीं खत्म नहीं होती थी।

रात को अक्सर फोन बजता।

“हैलो...”

और फिर शुरू हो जाती घंटों की बातें।

कभी किसी छोटी सी बात पर हँसी…

कभी जिंदगी के बड़े सपनों की चर्चा…

कभी किसी आने वाले टेस्ट की चिंता…

और कभी बस यूँ ही बिना किसी वजह के बातें।

कभी ऐसा भी होता कि दोनों खुद ही कह देते —

“यार... इतनी देर से क्या बातें कर रहे हैं?”

और फिर उसी बात पर दोनों हँसने लगते।

उनकी दोस्ती में कोई दिखावा नहीं था।

न कोई औपचारिकता…

न कोई झिझक…

बस एक सच्चा सा रिश्ता।

प्रफुल्ल उन कुछ लोगों में से था जो ऋषभ को बिना कहे समझ लेते थे।

अगर ऋषभ चुप होता, तो वह पूछे बिना समझ जाता कि कुछ बात है।

और अगर ऋषभ खुश होता, तो वह उससे ज्यादा खुश हो जाता।

“सच्चा दोस्त वही होता है

जो आपकी खुशी में हँसे

और आपकी खामोशी को भी समझ ले।”

ऋषभ की जिंदगी में बहुत लोग आए थे।

लेकिन प्रफुल्ल जैसा दोस्त शायद ही कोई था।

कई बार दोनों भविष्य के बारे में भी बात करते।

कौन कहाँ जाएगा…

आगे क्या करेगा…

क्या वे हमेशा ऐसे ही मिल पाएँगे…

फिर प्रफुल्ल मज़ाक में कहता —

“देख लेना... चाहे जहाँ भी जाएँ... दोस्ती नहीं टूटनी चाहिए।”

ऋषभ मुस्कुराते हुए कहता —

“कभी नहीं।”

शायद उस समय दोनों को अंदाज़ा नहीं था कि आने वाला समय उनकी जिंदगी को कितना बदलने वाला है।

लेकिन उस समय…

उनके लिए सबसे जरूरी था —

साथ चलना…

साथ हँसना…

और साथ यादें बनाना।

और शायद इसी रिश्ते को शब्द देने के लिए किसी ने सही कहा है —

दोस्ती वो रिश्ता है जिसमें कोई हिसाब नहीं होता।

साथ चलते हुए रास्तों में कभी कोई सवाल नहीं होता।

कभी हँसी में, कभी खामोशी में हर बात समझ आ जाती है।

सच्चे दोस्त के साथ जिंदगी थोड़ी आसान हो जाती है।

ऋषभ और प्रफुल्ल भी शायद ऐसी ही दोस्ती जी रहे थे।

उन्हें उस समय यह एहसास नहीं था कि यह छोटे-छोटे पल,

ये रास्ते,

ये झगड़े,

और ये रात की लंबी फोन कॉल्स…

एक दिन उनकी जिंदगी की सबसे कीमती यादें बन जाएँगी।

Chapter 12

THE MESSAGE

नए साल की पार्टी को अभी कुछ ही दिन हुए थे।

स्कूल फिर से अपनी सामान्य रफ्तार में लौट आया था।

क्लासेस, कोचिंग, टेस्ट... सब कुछ वैसे ही चल रहा था।

लेकिन जिंदगी अक्सर सबसे बड़े मोड़ तब देती है जब सब कुछ सामान्य लग रहा होता है।

इसी बीच एक दिन ऋषभ अपने गाँव गया हुआ था।

उसका गाँव राजसमंद जिले के एक छोटे से इलाके में था —

शहर की भागदौड़ से बिल्कुल अलग।

शाम का समय था।

हल्की ठंडी हवा चल रही थी।

आसमान में सूरज धीरे-धीरे ढल रहा था और खेतों के ऊपर सुनहरी रोशनी फैल रही थी।

दूर कहीं गायों की घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

गाँव की वह शांति शहर की हलचल से बिल्कुल अलग थी।

ऋषभ घर के बाहर चारपाई पर बैठा हुआ था।

उसके हाथ में उसका फोन था।

वह यूँ ही WhatsApp की पुरानी चैट्स स्क्रॉल कर रहा था।

कभी दोस्तों के मैसेज...

कभी ग्रुप की फनी बातें...

और कभी... प्रतिमा के साथ हुई लंबी चैट्स।

कुछ मैसेज पढ़कर वह हल्का सा मुस्कुरा देता।

कभी कोई मज़ाक याद आ जाता...

कभी कोई पुरानी बात...

जैसे वह अनजाने में उन पलों को फिर से जी रहा हो।

उसी समय अचानक फोन पर एक नया नोटिफिकेशन आया।

Pratima

ऋषभ का ध्यान तुरंत स्क्रीन पर चला गया।

दिल की धड़कन हल्की सी तेज़ हो गई।

उसने मैसेज खोला।

"Hi... क्या कर रहे हो?"

ऋषभ के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

उसने जवाब दिया —

“कुछ नहीं... गाँव आया हूँ। बस ऐसे ही बैठा हूँ।”

प्रतिमा का जवाब आया —

“अच्छा... गाँव कैसा है?”

“शांत... यहाँ सब कुछ धीमा लगता है।”

“अच्छा है... कभी-कभी ऐसी जगह पर रहना अच्छा लगता है।”

कुछ देर तक दोनों के बीच सामान्य बातें होती रहीं।

कैसी चल रही है पढ़ाई…

कोचिंग कैसी है…

गाँव कैसा लग रहा है…

बातचीत बिल्कुल साधारण थी।

लेकिन कभी-कभी साधारण बातें भी खास हो जाती हैं।

कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद प्रतिमा का एक मैसेज आया —

"Can I ask you something?"

ऋषभ ने जवाब दिया —

“हाँ... पूछो।”

कुछ सेकंड की चुप्पी।

जैसे शब्द टाइप हो रहे हों…

फिर हटाए जा रहे हों…

फिर दोबारा लिखे जा रहे हों…

फिर फोन की स्क्रीन पर एक नया मैसेज आया —

"Will you be my boyfriend?"

उस एक लाइन को पढ़ते ही जैसे समय कुछ पल के लिए रुक गया।

ऋषभ की आँखें उसी मैसेज पर टिक गईं।

वह कई सेकंड तक स्क्रीन को देखता ही रहा।

यह वही बात थी...

जिसका उसे शायद बहुत समय से इंतज़ार था।

दो साल की खामोशियाँ…

वो अनकहे एहसास…

वो देर से किया गया इज़हार…

सब कुछ जैसे उसी एक पल में याद आ गया।

शाम की हवा अब भी चल रही थी।

लेकिन ऋषभ के दिल की धड़कन अचानक तेज़ हो गई थी।

उसने आसमान की तरफ देखा।

सूरज अब पूरी तरह ढल चुका था।

आसमान में हल्की-हल्की लालिमा बची थी।

उसने धीरे-धीरे फोन उठाया और जवाब टाइप किया —

"Yes... I will."

कुछ सेकंड तक उसने स्क्रीन को देखा।

फिर मैसेज भेज दिया।

मैसेज भेजने के बाद वह कुछ पल चुप बैठा रहा।

जैसे उस पल को महसूस करना चाहता हो।

कुछ सेकंड बाद फोन फिर से वाइब्रेट हुआ।

Pratima:

"Really?"

ऋषभ मुस्कुराया और लिखा —

"Yes... really."

कुछ सेकंड बाद एक छोटा सा मैसेज आया —

"☺"

बस एक छोटा सा स्माइली।

लेकिन उस छोटे से इमोजी में भी बहुत सारी भावनाएँ छिपी थीं।

आसमान अब लगभग अँधेरा हो चुका था।

दूर कहीं गाँव की लाइटें जलने लगी थीं।

ऋषभ अब भी चारपाई पर बैठा था।

लेकिन उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान थी।

क्योंकि कभी-कभी...

"जिस बात का इंतज़ार हम लंबे समय तक करते हैं,

वह अचानक एक साधारण से मैसेज में हमारे सामने आ जाती है।"

उस रात ऋषभ देर तक आसमान को देखता रहा।

जैसे उसकी जिंदगी में कोई नया अध्याय शुरू हो गया हो।

ऋषभ की कहानी अब एक नए मोड़ पर पहुँच चुकी थी।

अब यह सिर्फ एक खामोश कहानी नहीं रही थी।

अब यह एक नई शुरुआत थी।

Chapter 13

EIGHTEEN SECRET DAYS

कुछ रिश्ते शोर में नहीं, खामोशी में पलते हैं।

ऋषभ और प्रतिमा का रिश्ता भी कुछ ऐसा ही था।

गाँव में आया वह छोटा-सा मैसेज अब उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा राज़ बन चुका था।

लेकिन उस दिन के बाद, दोनों ने एक बात चुपचाप तय कर ली थी —

इस रिश्ते के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए।

न दोस्तों को...

न क्लासमेट्स को...

न ही उनके ग्रुप को।

सब कुछ पहले जैसा ही रहना था।

स्कूल में वे अब भी वैसे ही रहते जैसे पहले रहते थे —

दो अच्छे दोस्त।

ग्रुप के साथ हँसी-मज़ाक,

खाली पीरियड्स में बातें,

कोचिंग में पढ़ाई —

सब कुछ बिल्कुल सामान्य था।

लेकिन अब उन सबके बीच कुछ और भी था...

एक छुपा हुआ रिश्ता।

कभी क्लास में बैठते समय ऋषभ अनजाने में उसकी तरफ देख लेता।

और उसी पल प्रतिमा भी उसकी तरफ देख रही होती।

दोनों की नज़रें कुछ सेकंड के लिए मिलतीं...

फिर दोनों हल्का सा मुस्कुरा देते।

बिना कुछ बोले।

जैसे उनकी आँखों के बीच कोई खामोश बातचीत चल रही हो।

कई बार तो पूरा ग्रुप साथ बैठा होता...

और फिर भी दोनों की नज़रें एक-दूसरे को ढूँढ ही लेतीं।

कभी कॉरिडोर में अचानक सामने आ जाना...

कभी पानी पीने के बहाने एक ही जगह रुक जाना...

कभी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए एक छोटी सी मुस्कान।

यह सब बहुत छोटा था।

लेकिन दोनों के लिए यही सबसे खास था।

कोचिंग में भी यही होता।

टीचर बोर्ड पर सवाल हल कर रहे होते...

और बीच-बीच में चुपके से नज़रें मिल जातीं।

फिर दोनों तुरंत ऐसे दिखाते जैसे वे पूरी तरह सवाल पर ध्यान दे रहे हों।

लेकिन असली बातें तो रात में होती थीं।

रात को जैसे ही सब सो जाते...

WhatsApp की लंबी चैट्स शुरू हो जातीं।

"आज क्लास में तुम हँस क्यों रहे थे?"

"तुमने देखा था?"

"हाँ... सब देखता हूँ।"

ऐसी छोटी-छोटी बातें।

कभी पढ़ाई की चर्चा,

कभी पूरे दिन की बातें,

और कभी सिर्फ एक-दूसरे को छेड़ना।

कई बार बातें इतनी लंबी हो जातीं कि रात के 1 या 2 बज जाते।

फिर भी लगता कि अभी बहुत कुछ कहना बाकी है।

एक रात प्रतिमा ने मज़ाक में लिखा —

"अगर किसी को पता चल गया ना... तो?"

ऋषभ ने जवाब दिया —

"तो हम कह देंगे हम सिर्फ अच्छे दोस्त हैं।"

"और अगर कोई मान ही नहीं रहा हो?"

"तो... फिर हम दोनों मुस्कुरा देंगे।"

उस मैसेज के बाद कुछ सेकंड की चुप्पी रही।

फिर प्रतिमा ने लिखा —

“तुम अजीब हो।”

ऋषभ ने जवाब दिया —

“और तुम?”

“मैं... शायद तुम्हारी तरह।”

उसके बाद दोनों देर तक हँसते रहे।

कई बार ऐसा भी होता कि बात करते-करते अचानक खामोशी छा जाती।

कोई मैसेज नहीं...

बस दोनों ऑनलाइन।

फिर कुछ देर बाद ऋषभ लिखता —

“सो गए?”

“नहीं... बस ऐसे ही।”

“क्या सोच रही हो?”

“कुछ नहीं... बस...”

और फिर वही लंबी बातचीत शुरू हो जाती।

उनकी बातचीत में कोई जल्दबाज़ी नहीं थी।

न कोई दिखावा...

न कोई बड़े वादे।

बस छोटी-छोटी खुशियाँ।

स्कूल के कॉरिडोर में एक नज़र...

कोचिंग में एक मुस्कान...

और रात की लंबी चैट्स।

"कुछ रिश्ते दुनिया से छुपे होते हैं,

लेकिन उन दो लोगों के लिए वही दुनिया बन जाते हैं।"

समय धीरे-धीरे बीत रहा था।

दिन सामान्य थे...

लेकिन उनके लिए हर दिन खास था।

हर सुबह एक नई मुस्कान लेकर आती थी।

हर शाम एक नई बातचीत लेकर आती थी।

और देखते ही देखते...

18 दिन गुजर गए।

18 दिन —

छुपी हुई मुस्कानों के,

लंबी चैट्स के,

और उन अनकहे पलों के।

दोनों को शायद यह महसूस भी नहीं हुआ कि समय कितनी जल्दी बीत गया।

उन्हें नहीं पता था कि यह 18 दिन...

उनकी जिंदगी के सबसे शांत...

सबसे खूबसूरत...

और सबसे यादगार दिनों में बदलने वाले थे।

Chapter 14

THE DAY EVERYTHING FELL SILENT

कभी-कभी जिंदगी बिल्कुल सामान्य चल रही होती है...

और अचानक एक ऐसा पल आता है जब सब कुछ बदल जाता है।

ऋषभ और प्रतिमा की कहानी भी अब ऐसे ही एक मोड़ पर आकर खड़ी हो गई थी।

उनके बीच सब कुछ धीरे-धीरे बहुत सहज हो गया था।

स्कूल में चुपके से एक-दूसरे को देख लेना...

कभी आँखों ही आँखों में मुस्कुरा देना...

और रात को घंटों तक चलने वाली चैट्स।

छोटी-छोटी बातें ही उनकी सबसे बड़ी खुशियाँ बन गई थीं।

लेकिन उस दिन कुछ अलग था।

सुबह से ही ऋषभ की तबीयत ठीक नहीं थी।

हल्का बुखार... शरीर में थकान... और सिर में दर्द।

फिर भी वह स्कूल गया।

शायद आदत के कारण...

या शायद इसलिए क्योंकि वह उसे देखना चाहता था।

पूरा दिन जैसे-तैसे बीता।

क्लास में बैठा तो रहा…

लेकिन उसका ध्यान बार-बार भटकता रहा।

शाम तक उसकी हालत और ज्यादा थकी हुई लग रही थी।

रात को हमेशा की तरह उसने फोन उठाया।

कुछ देर बाद उसकी और प्रतिमा की WhatsApp पर बातचीत शुरू हो गई।

दिन भर की बातें…

छोटे-छोटे मज़ाक…

साधारण-सी बातें।

लेकिन उस दिन उसकी तबीयत सच में ठीक नहीं थी।

चैट करते-करते उसकी आँखें भारी होने लगीं।

प्रतिमा कुछ लिख रही थी…

ऋषभ जवाब टाइप कर रहा था…

और उसे खुद भी पता नहीं चला कि…

वह कब सो गया।

फोन उसके हाथ में ही पड़ा रह गया।

अगली सुबह जब उसकी आँख खुली,

तो उसने आदत के अनुसार सबसे पहले फोन उठाया।

जैसे ही उसने WhatsApp खोला…

उसका दिल एक पल के लिए ठहर सा गया।

स्क्रीन पर लिखा था —

"100 messages deleted."

वह कुछ सेकंड तक उसी स्क्रीन को देखता रहा।

उसके मन में कई सवाल एक साथ उठने लगे।

क्या हुआ होगा?

उसने इतने सारे मैसेज क्यों डिलीट किए?

क्या उसने कुछ गलत कहा था?

उसने तुरंत मैसेज किया —

"क्या हुआ? सब ठीक है?"

लेकिन मैसेज डिलीवर नहीं हुआ।

उसने फिर से मैसेज भेजा।

फिर भी वही…

सिर्फ एक टिक।

अब उसके मन में बेचैनी बढ़ने लगी।

वह कुछ देर तक स्क्रीन को देखता रहा…

जैसे कोई जवाब खुद ही सामने आ जाएगा।

लेकिन कुछ नहीं हुआ।

वह तैयार हुआ और स्कूल चला गया।

स्कूल पहुँचकर उसने सबसे पहले प्रतिमा को ढूँढा।

जब उसकी नज़र उस पर पड़ी,

तो उसे तुरंत एहसास हो गया कि कुछ ठीक नहीं है।

प्रतिमा उसे पूरी तरह नजरअंदाज कर रही थी।

न कोई नज़र मिलाना…

न कोई मुस्कान…

न कोई बात।

जैसे उनके बीच कुछ था ही नहीं।

पूरा दिन ऋषभ इसी उलझन में रहा।

कई बार वह उसके पास जाने की सोचता…

लेकिन हर बार रुक जाता।

शायद वह सही समय का इंतज़ार कर रहा था।

शायद वह यह उम्मीद कर रहा था कि सब ठीक हो जाएगा।

लेकिन अगले दिन भी कुछ नहीं बदला।

वही दूरी…

वही खामोशी…

वही अनदेखी।

अब यह सब उसके लिए सहन करना मुश्किल हो रहा था।

उस रात उसने तय किया —

अब उसे सीधे पूछना ही होगा।

उसने फोन उठाया…

और शायद पहली बार प्रतिमा को कॉल किया।

फोन कुछ सेकंड तक बजता रहा।

फिर कॉल उठ गई।

लेकिन दूसरी तरफ खामोशी थी।

कुछ पल बाद ऋषभ ने धीरे से कहा —

“प्रतीमा… सब ठीक है ना?”

कोई जवाब नहीं आया।

उसने फिर नरमी से कहा —

“अगर कोई परेशानी है तो बता सकती हो… शायद हम मिलकर उसे ठीक कर सकते हैं।”

कुछ सेकंड तक फिर से चुप्पी रही।

फिर प्रतिमा की धीमी आवाज़ आई —

“मुझे लगता है… चीजें वैसी नहीं चल रही हैं जैसी चलनी चाहिए।”

ऋषभ कुछ पल चुप रहा।

फिर उसने शांत स्वर में पूछा —

"मतलब…?"

प्रतिमा ने धीरे-धीरे कहा —

"मैं खुद को ठीक से समझ नहीं पा रही हूँ…

और मैं अपनी खुशियों या अपने सपनों के लिए किसी और पर निर्भर नहीं रहना चाहती…

मुझे अपने दम पर आगे बढ़ना है… independent बनना है।"

ऋषभ ने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी।

उसके मन में बहुत कुछ चल रहा था…

लेकिन उसने खुद को शांत रखा।

फिर उसने धीरे से पूछा —

"तो तुम्हारे हिसाब से… इसका हल क्या है?"

फोन के उस पार कुछ देर तक खामोशी रही।

फिर प्रतिमा ने धीमी आवाज़ में कहा —

"शायद… हमें यहीं रुक जाना चाहिए…

Maybe… we should break up."

कुछ पल के लिए सब कुछ बिल्कुल शांत हो गया।

ऋषभ के मन में बहुत सारी बातें थीं।

बहुत सारे सवाल भी।

लेकिन उसने उनमें से कुछ भी नहीं कहा।

कभी-कभी चुप रहना… सबसे मुश्किल होता है।

फिर उसने धीरे से जवाब दिया —

“ठीक है… अगर यही तुम्हें सही लगता है।”

उसकी आवाज़ शांत थी…

लेकिन उसके अंदर बहुत कुछ टूट चुका था।

कुछ सेकंड बाद कॉल कट गई।

और उसी के साथ…

उनकी कहानी का वह हिस्सा खत्म हो गया

जिसे उन्होंने चुपके-चुपके जिया था।

“कुछ कहानियाँ पूरी नहीं होतीं,

लेकिन फिर भी दिल में हमेशा जिंदा रहती हैं।”

कुछ दिन थे बस…

पर एहसास हमेशा के जैसे थे।

नज़रें मिलती थीं चुपके से…

और खामोशी में भी किस्से थे।

कुछ दिन यूँ ही गुजर गए

हँसी, बातों और ख्वाबों में…

फिर दो दिन की दूरी आई

अजीब सी खामोशियों के हिसाबों में…

और फिर एक रात…

एक फैसला…

सब कुछ बदल गया।

उस रात के बाद…

उनकी बातों की जगह खामोशी ने ले ली।

Chapter 15

AFTER THE SILENCE

कुछ कहानियाँ खत्म होकर भी खत्म नहीं होतीं।

वे बस ज़िंदगी के किसी कोने में चुपचाप रह जाती हैं।

उस रात के बाद ऋषभ की जिंदगी जैसे अचानक बदल गई थी।

अगले दिन जब वह स्कूल गया, सब कुछ पहले जैसा ही था।

वही क्लास… वही दोस्त… वही कॉरिडोर…

सब कुछ बिल्कुल सामान्य।

लेकिन अब उसके अंदर कुछ पहले जैसा नहीं था।

प्रतिमा भी वहीं थी।

वही चेहरा… वही जगह…

लेकिन अब उनके बीच एक अजीब सी दूरी आ चुकी थी।

वे दोनों कई बार एक-दूसरे के सामने से गुजरते।

कभी सीढ़ियों पर…

कभी कॉरिडोर में…

कभी कोचिंग के बाहर…

लेकिन अब न कोई मुस्कान होती…

न कोई बात।

बस एक पल के लिए नज़रें मिलतीं…

और फिर दोनों दूसरी तरफ देखने लगते।

जैसे दोनों ने चुपचाप यह तय कर लिया हो

कि अब शब्दों की कोई जरूरत नहीं है।

ऋषभ के लिए यह सब आसान नहीं था।

क्योंकि उसे हर दिन वही जगहें देखनी पड़ती थीं

जहाँ कभी छोटी-छोटी खुशियाँ छुपी हुई थीं।

वही क्लास…

जहाँ कभी चुपके से नज़रें मिलती थीं।

वही कॉरिडोर…

जहाँ कभी बिना वजह मुस्कान आ जाती थी।

वही कोचिंग…

जहाँ कभी सवालों से ज्यादा खामोशियाँ समझ में आती थीं।

अब सब कुछ सामान्य था।

लेकिन उसके अंदर एक अजीब सा खालीपन था।

कई बार उसके मन में सवाल आते—

क्या यह सब सच में हुआ था?

या बस कुछ दिनों का एक सपना था?

क्योंकि कभी-कभी…

सब कुछ इतना अचानक खत्म हो जाता है

कि यादें भी यकीन नहीं होने देतीं।

धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता रहा।

शुरुआत में हर दिन थोड़ा मुश्किल था।

हर सुबह वही चेहरे…

हर दिन वही दूरी…

लेकिन समय के साथ…

चुप रहना आसान होने लगा।

अब वे एक-दूसरे को देखते भी कम थे।

और जब देखते भी…

तो बस एक साधारण-सी नज़र होती।

जैसे दोनों ने अपने-अपने तरीके से

उस कहानी को दिल में रख लिया हो।

दिन धीरे-धीरे महीनों में बदल गए।

ऋषभ और प्रतिमा ने पूरा एक साल उसी स्कूल में बिताया।

उसी कोचिंग में पढ़ाई की।

एक ही रास्तों से गुजरते रहे।

लेकिन उनके बीच अब सिर्फ खामोशी थी।

न कोई बात…

न कोई शिकायत…

न कोई सवाल…

बस समय आगे बढ़ता रहा।

फिर समय आया 12वीं के आखिरी दिनों का।

एग्जाम का दबाव…

भविष्य की चिंताएँ…

नई शुरुआत की तैयारी…

सब कुछ बदलने वाला था।

आखिरी पेपर खत्म हुआ।

दोस्तों ने एक-दूसरे को बधाई दी।

कुछ ने फोटो खिंचवाई…

कुछ ने भविष्य की बातें कीं।

लेकिन ऋषभ और प्रतिमा…

दोनों अलग-अलग खड़े थे।

न कोई आखिरी बातचीत हुई…

न कोई खास विदाई।

बस…

जिंदगी आगे बढ़ गई।

दो साल पहले जहाँ से यह कहानी शुरू हुई थी…

अब वहीं से दोनों की राहें अलग हो गईं।

12वीं पास करने के बाद दोनों अपनी-अपनी दुनिया की तरफ निकल गए।

न कोई मैसेज…

न कोई कॉल…

न कोई संपर्क।

लेकिन शायद कुछ कहानियाँ ऐसी ही होती हैं।

वे पूरी नहीं होतीं…

फिर भी दिल के किसी कोने में हमेशा के लिए रह जाती हैं।

कभी-कभी ऋषभ पुरानी चैट्स याद करता…

वो 18 दिन…

वो चुपके से मुस्कुराना…

वो रात की लंबी बातें…

और फिर वह हल्का सा मुस्कुरा देता।

क्योंकि कुछ यादें दर्द नहीं देतीं…

बस चुपचाप साथ चलती रहती हैं।

कई बार उसने सोचा—

क्या वह कहानी सच में खत्म हो गई थी?

या वह अब भी कहीं यादों के किसी शांत कोने में जिंदा थी?

शायद इसीलिए उसने अपनी कहानी का नाम रखा —

"20 Days of Forever."

क्योंकि कभी-कभी…

"कुछ दिन ही काफी होते हैं

किसी को हमेशा के लिए याद बन जाने के लिए।"